بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-12.01.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

ओहद के युद्ध की परिस्थितियों एवं घटनाओं का वर्णन तथा विश्व युद्ध से बचने के लिए दुआ की तहरीक।

सारांश ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 12 जनवरी 2024, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि ओहद की लड़ाई में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन चरित्र के संदर्भ में वर्णन हो रहा था।

इस हवाले से और आगे का वर्णन इस प्रकार है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों के बीच दुशमन से अधिक निकट घेरे में थे तथा आपके साथ पन्द्रह साथी दृढ़ता से जमे रहे, आठ मुहाजिर तथा सात अंसार में से। कुछ इतिहासकारों ने यह कहा है कि आपके सामने तीस साथी दृढ़ता पूर्वक जमे रहे तथा सभी यह कहते हैं कि मेरा चेहरा आप स. के सामने रहे तथा मेरे प्राण आप स. के प्राण के सामने तथा आप स. सलामत रहें एवं मेरे प्राण आप स. पर क़ुर्बान हों। विभिन्न रिवायतों में दृढ़ता पूर्वक जमे रहने वाले सहाबियों की संख्या विभिन्न बयान की गई है। इसका एक कारण यह भी कहा जा सकता है कि सहाबियों की संख्या उस समय की परिस्थिति के अनुसार बदलती रही होगी। जिसने पन्द्रह देखे उसने पन्द्रह बता दिए, जिसने जितने देखे वे बयान कर दिए। सहाबी आप स. के निकट घेरा बनाकर जमा होते थे तथा फिर शत्रु के हमले से घेरा टूट जाता था, बिखर जाते थे, फिर एकत्र होते थे। अतएव बात यही है कि सहाबी दृढ़ता से जमे रहने का नमूना दिखाते रहे तथा किसी को किसी प्रकार यह भय नहीं था कि मौत आएगी। यह भी वर्णन मिलता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ओहद के दिन सहाबा रज़ी. के एक दल से मौत पर बैअत ली थी, बैअत करने वाले भाग्य शाली सहाबियों की संख्या आठ बयान हुई है, उनमें से कोई भी शहीद नहीं हुआ।

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ओहद के दिन सहाबियों का दृढ़ संकल्प तथा बलिदान होने की भावना का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि जो सहाबी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आस पास जमा थे उन्होंने जो प्राणों की बलि देने की भावना दिखाई, दुनिया उसका उदाहरण लाने में विफल है। ये लोग पतंगों की भांति आप स. के चारों ओर घूमते थे तथा आप स. के लिए अपनी जान पर खेल रहे थे। जो वार भी पड़ता था सहाबा रज़ी. अपने ऊपर ले लेते थे और आप स. को बचाते थे, साथ ही दुशमन पर वार भी करते जाते थे। ये गिनती के जांनिसार इस महान बहाव के सामने कब तक ठहर सकते थे जो प्रत्येक क्षण ऊँची लहरों की भांति चारों ओर से बढ़ता चला आता था। दुशमन के हमले की हर एक लहर मुसलमानों को कहीं का कहीं बहा कर ले जाती थी किन्तु जब ज़रा ज़ोर थमता तो मुसलमान लड़ते भिड़ते फिर अपने प्रिय आक़ा स. के आस पास जमा हो जाते थे।

ईसाइयों ने यह आरोप लगाया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने झूठ बोलना अथवा अनुचित बात कहना वैध कहा है। इस निरर्थक आरोप का उत्तर देते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- हमारे सय्यद व मौला जनाब मुक़द्दस नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक उच्चतम नमूना इस स्थान पर साबित होता है तथा वह यह है कि जिस तोरिए (तोरिए का शाब्दिक अर्थ है कि ज़बान से कुछ कहना तथा दिल में कुछ और होना, ऐसी बात कहना जिसके दो अर्थ निकलते हों)को आपका यसूअ मसीह बचपन के भोजन, माँ के दूध की तरह पूरी आयु उपयोग करता रहा। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यथासम्भव इससे बचने का आदेश दिया है। जनाब सय्यदुल मुर्सिलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ओहद की लड़ाई में अकेले होने के बावजूद नंगी तलवारों के सामने कह रहे थे कि मैं मुहम्मद हूँ, मैं नबीअल्लाह हूँ, मैं इब्ने अब्दुल मुत्तलिब हूँ और फिर दूसरी ओर आपका यसूअ कांप कांप कर अपने चेलों को यह अनुचित शिक्षा देता है कि किसी से न कहना कि मैं यसूअ मसीह हूँ, यद्यपि इस कलिमे से कोई उसकी हत्या न करता।

ओहद की लड़ाई क झंडा वाहक हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ी. ने झंडे की सुरक्षा करने का हक़ ख़ूब अदा किया। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब लिखते हैं कि इब्ने क़मीअः ने हज़रत मुस्अब रज़ी. के उस हाथ पर हमला किया जिससे उन्होंने झंडा थामा हुआ था तथा उस हाथ को काट दिया। हज़रत मुस्अब रज़ी. ने झंडा दूसरे हाथ में पकड़ लिया, इब्ने क़मीअः ने उस हाथ को भी काट डाला तो मुस्अब रज़ी. ने दोनों हाथों से झंडे को अपनी छाती से लगा लिया। इब्ने क़मीअः ने तीसरी बार हमला करके भाला आपकी छाती में गाड़ दिया, भाला टूट गया और हज़रत मुस्अब रज़ी. गिर गए। झंडा तो किसी दूसरे मुसलमान ने आगे बढ़ कर थाम लिया परन्तु चूँकि मुस्अब रज़ी. का डील डौल आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिलता था, इब्ने क़मीअः ने समझा कि मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मार लिया है, अथवा यह भी सम्भव है कि उनकी ओर से यह दुष्टता केवल धोखा देने के विचार से की

गई हो। अतः उसने शोर मचा दिया कि मैंने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मार लिया ह। इस ख़बर से मुसलमानों के रहे सहे औसान भी जाते रहे तथा उनकी एकता पूर्णतः बिखर गई।

जैसा कि ऊपर बयान हुआ है कि ओहद के मैदान में कुछ क्षणों की अवहेलना ने इस्लाम की सेना की विजय को अस्थाई पराज्य में बदल दिया परन्तु पूरे विश्व में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही युद्ध के इतिहास में उच्चतम सेनापति तथा विवेक पूर्ण निर्णय के स्वामी स्वीकार किए जाते हैं। आप स. ने युद्ध की बदलती हुई स्थिति पर गहरी दृष्टि रखी। चार गुना बड़ी सेना के सामने अपने बिखरे हुए तथा कमज़ोर सैन्य दलों को इस प्रकार सुरक्षित किया कि दुशमन इस्लाम की सेना को पूरी तरह कुचल देने की कुधारणा पर अमल न कर सका।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम की सेना का झंडा हज़रत अली रज़ी. को प्रदान किया तथा अपने आस पास एकत्र केवल कुछ लोगों के इस्लामी दल की छोटी सी जमाअत के साथ मिलकर ऐसा युद्ध लड़ा कि मुशरिकों के घेरे से निकलने का रास्ता बनाया तथा युद्ध के मैदान में उपलब्ध बिखरी हुई इस्लाम की सेना की ओर बढ़े जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शहादत की सूचना सुनकर साहस खोती जा रही थी। मक्का के मुशरिकों ने भी इस्लाम की सेना की वापसी को असफल बनाने के लिए ताबड़तोड़ हमले शुरु कर दिए परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे हटने की युक्ति भी ऐसी सफल थी कि मुट्ठी भर लोग अर्ध वृत्तकार परिधि के रूप में कंधे से कंधा मिलाए दुशमन के हमलों को असफल बनाते हुए, चुपचाप घाटी की ओर खिसक रहा था। दुशमन ने घेरा डालने के लिए भरपूर शक्ति का उपयोग किया किन्तु आप स. ने हमला करने वालों की भीड़ को चीर कर रास्ता बना ही लिया।

ओहद की लड़ाई के अवसर पर नींद तथा मूर्छता छा जाने का वर्णन भी मिलता है। हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ी. तथा हज़रत कअब बिन उमरू अन्सारी रज़ी. ने इस मूर्छता का विस्तार से वर्णन किया है कि किस तरह ख़ुदा तआला ने इस मूर्छता के द्वारा मुसलमानों के दिलों पर शांति नाज़िल की। हज़रत अबू तलहा रज़ी. से रिवायत है कि ओहद के युद्ध वाले दिन मैं सिर उठा कर देखने लगा तो हर आदमी सिर झुकाए अपनी ढाल के नीचे झुक रहा था। सारी क़ौम ऐसे समय पर नींद की अवस्था में चली जाए जबकि लड़ाई हो रही हो तथा शत्रु से बड़ा ख़तरा हो, यह कोई संयोग की बात नहीं, यह एक विषमता है, चमत्कार है।

एक रिवायत के अनुसार ओहद के दिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र चेहरे पर तलवार से सत्तर वार किए गए परन्तु अल्लाह तआला ने इस सबके कुप्रभाव से आप स. को बचाया। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि लड़ाई में सबसे बहादुर वह समझा जाता था जो आप स. के निकट होता था, क्यूँकि आप स. बड़े बड़े भयानक स्थानों पर होते थे। सुब्हानल्लाह, क्या शान है, ओहद में देखो कि तलवारों पर तलवारें पड़ती हैं। ऐसा भीषण युद्ध हो रहा है कि सहाबी सहन

नहीं कर सकते, परन्तु युद्ध स्थल का यह पुरुष सीना तान कर लड़ रहा है। इसमें सहाबियों का दोष नहीं था, अल्लाह तआला ने उनको क्षमा कर दिया, बल्कि इसमें भेद यह था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दलेरी का नमूना दिखाया जाए।

ओहद के युद्ध का विस्तार पूर्वक वर्णन आगे भी जारी रहने का इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़ूरे अनवर ने कुछ मृतकों का सद्वर्णन तथा ग़ायब जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई। इनमें फ़लिस्तीन के ग़ज़ा इलाक़े के हमारे अहमदी भाई मुहम्मद उकाशा साहब, जिनको अत्यंत क्रूरता के साथ सिर में गोली मार कर शहीद किया गया था, हैं। हुज़ूर ने श्रीमानजी के सद्गुण बयान फ़रमाने के बाद फ़रमाया- अल्लाह तआला उनके दर्जे बुलन्द फ़रमाए, उनकी संतान को भी उनकी दुआओं का वारिस बनाए, उनके बच्चे तथा अन्य सगेसम्बधी अहमदियत और वास्तविक इस्लाम को समझने वाले हों तथा फिर अमन एवं सलामती देखने वाले हों।

अल्लाह तआला उनके क्षेत्रों में अमन स्थापित फ़रमाए, अत्याचारी के हाथ राके तथा अत्याचारियों का विनाश करे। इसराईल अब लबनान की सीमा के साथ भी हिज़बुल्लाह के विरुद्ध योजना बना रहा है, इससे परिस्थितियाँ और अधिक बिगड़ेंगी। इसी तरह अमरीका तथा बर्तानिया ने हौसी यमनी क़बीलों के विरुद्ध जो अभियान चलाया है, ये सब चीज़ें जो हैं, ये युद्ध को और अधिक भड़का रही हैं तथा अब तो अनेक लिखने वालों ने लिख दिया है, लिख रहे हैं कि विश्व युद्ध की सम्भावना अति निकट दिखाई दे रही है। अतः दुआओं की अति आवश्यकता है, अल्लाह तआला इंसानियत को बुद्धि एवं समझ प्रदान करे।

इनके अतिरिक्त मुकर्रमा अमतुन्नसीर ज़फ़र साहिबा पतनी मुकर्रम हैदर अली ज़फ़र साहब, मुकर्रमा नसीम अख़तर साहिबा, पतनी हबीबुल्लाह काहलों साहब तथा मुकर्रमा मुबारका बेगम साहिबा पतनी रशीद अहमद ज़मीर साहब का भी सद्वर्णन फ़रमाया। हुज़ूर-ए-अनवर ने मृतकों की मग़फ़िरत तथा दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131